ओपीएस ऐसी योजना थी, जिसके तहत सभी पेंशनधारकों को महंगाई में भी गुजारे लायक पर्याप्त धनराशि मिल जाती थी, पर यह नई पेंशन योजना महंगाई के इस दौर में गुजारे लायक नहीं है। पुरानी पेंशन योजना, ओपीएस पुनः लागू करने हेतु सरकारी कर्मचारी और संगठन लगातार सरकार से माँग कर रहे हैं।

मेरी सदन के माध्यम से माँग है कि सरकार एक जनवरी, 2004 से पूर्व लागू पुरानी पेंशन योजना, ओपीएस पुनः प्रारंभ करे, जिससे सेवानिवृत्त कर्मचारी अत्यधिक महंगाई के इस दौर में गुजर-बसर लायक पेंशन पा सकें। ...(**व्यवधान**)... मान्यवर, निलंबित सदस्यों को बहाल किया जाए। उनके सर्मथन में हम सदन से बहिर्गमन करते हैं। ...(**व्यवधान**)...

DR. AMAR PATNAIK (Odisha): Sir, I associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

SHRI BHASKAR RAO NEKKANTI (Odisha): Sir, I too associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

(At this stage, some hon. Members left the Chamber.)

श्री सभापति : आपने जो प्रस्ताव किया है, उसका बहिष्कार करते हैं! ...(**व्यवधान**)... This is not a good practice. Now, Shri M. Shanmugam; absent. Shrimati Seema Dwivedi.

Demand for early resolution of All-India Strike by Junior Resident doctors

श्रीमती सीमा द्विवेदी (उत्तर प्रदेश) : महोदय, वर्ष 2021 समाप्त होने को है, लेकिन अभी तक NEET और PG की परीक्षा का रिज़ल्ट आउट न होने से जितने भी JR-II हैं, उनके सामने उत्पन्न स्थिति की ओर मैं सरकार का ध्यान आकृष्ट कराना चाहती हूँ।

महोदय, ये सारे जूनियर डॉक्टर्स चिकित्सकीय कार्य का बहिष्कार कर चुके हैं और इन डॉक्टरों के हड़ताल पर जाने से अस्पताल एवं मरीजों के सामने संकट की स्थिति पैदा हो गई है, क्योंकि मरीजों का उपचार सही ढंग से नहीं हो पा रहा है। डॉक्टरों का कहना है कि NEET एवं PG की परीक्षा का परिणाम घोषित न होने के कारण उनके ऊपर बहुत भार पड़ गया है। लम्बे समय तक कार्य करने से डॉक्टरों का स्वास्थ्य खराब हो रहा है तथा चिकित्सा का सही ज्ञान प्राप्त न होने के कारण उनका भविष्य भी अच्छा नहीं है। मेरा यह भी कहना है कि JR-I के न आने के कारण, JR-II के बच्चे बेड के कार्य से लेकर खून एकत्रित करने तक का काम कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में, मरीजों की जाँच-पड़ताल के अलावा उनका ऑपरेशन एवं इलाज सही ढंग से नहीं हो पा रहा है, जिससे उन डॉक्टर्स का भविष्य अच्छा नहीं होगा और डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी होने के बाद वे मरीजों का अच्छा इलाज भी नहीं कर सकेंगे।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि अस्पतालों में डॉक्टरों की पहले से ही कमी है। डॉक्टरों का कहना है कि जो JR-II हैं, उनका दो वर्ष का कार्यकाल लगभग पूरा होने वाला है, लेकिन JR-I के

न होने के कारण उनके स्वास्थ्य एवं शिक्षा, दोनों पर बुरा असर पड़ रहा है। इसलिए उनकी सरकार से यह माँग है कि माननीय सुप्रीम कोर्ट में जो मामला लंबित है, वहाँ वह पहल करके उसका अति शीघ्र निस्तारण कराने की कृपा करे, क्योंकि JR-II, जिनका दो वर्ष का कार्यकाल लगभग पूरा होने को है, अभी तक JR-I के न आने के कारण उनके ऊपर बहुत load पड़ रहा है तथा मरीजों का भी सही ढंग से इलाज नहीं हो पा रहा है।

अतः हम यह माँग करते हैं कि सरकार माननीय सर्वोच्च न्यायालय से अपील करके अति शीघ्र परीक्षा परिणाम जारी करने की कृपा करे।

DR. AMAR PATNAIK (Odisha): Sir, I associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

LT. GEN. (DR.) D.P. VATS (RETD.) (Haryana): Sir, I also associate myself with the Special Mention made by the hon. Member.

OBSERVATION BY THE CHAIR

श्री सभापति : माननीय सदस्यगण, कल संसदीय कार्य मंत्री ने जिस विषय का प्रस्ताव रखा और हाउस ने उसे स्वीकृति दी तथा कुछ सदस्यों को निलम्बित किया गया है, उसके बारे में कुछ लोगों ने कहा कि उन लोगों के बारे में उस समय कुछ नहीं कहा गया।

मैं बताना चाहता हूँ कि 10 तारीख को जो घटना हुई, उसके बारे में मैंने 11 तारीख को हाउस में यह मेंशन किया था: "Hon. Members, I rise in deep anguish to place on record the way this august House is being subjected to sacrilege and that too propelled by a sense of competition among some sections of the House since the commencement of this Monsoon Session. Everything said or done, violating, hurting or destroying the sacredness of any place amounts to an act of sacrilege. We are a land of temples, churches, mosques and *gurudwaras*. These are holy places with demarcated sacred areas which are known as sanctum sanctorum. The Parliament, the apex legislature of our country, is regarded as the temple of democracy. The Table area where the officers and the reporters of the House, the Secretary-General and the Presiding Officer are seated is considered as the holy sanctum sanctorum of the House. A certain degree of sacredness is attached to this place. In our temples, devotees are allowed only up to that place and not beyond. Entering this sanctum sanctorum of the House, in itself is an act of sacrilege and it has been happening quite often in a routine manner. I am distressed by the way this sacredness was destroyed yesterday. While some Members sat on the Table, some others climbed on the Table of the